भूमिका

प्रस्तुत शोध-विषय हिंदी के जाने-माने व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई और मैथिली के प्रतिष्ठित व्यंग्यकार हरिमोहन झा की व्यंग्य कृतियों क्रमशः 'वैष्णव की फिसलन' एवं 'खट्टर काका' पर आधारित है। व्यंग्य को एक स्वतंत्र विधा के रूप में पहचान दिलाने में हरिशंकर परसाई एवं हरिमोहन झा दोनों का अपने-अपने साहित्य में अप्रतिम योगदान है । हरिमोहन झा ने अपनी व्यंग्य कृति 'खट्टर काका' के माध्यम से कर्मकांडों, धार्मिक विसंगतियों एवं सामाजिक रूढ़ियों पर करारा व्यंग्य किया है। कुछ इसी प्रकार की धार्मिक, राजनीतिक एवं सामाजिक विसंगतियों को लक्ष्य करके हरिशंकर परसाई ने 'वैष्णव की फिसलन' नामक व्यंग्य संग्रह का सृजन किया है।

व्यंग्य को एक साहित्यिक प्रवृत्ति के रूप में देखा जाये अथवा एक स्वतंत्र विधा के रूप में यह प्रश्न वाद-विवाद का है। परन्तु यह निर्विवाद है कि हरिशंकर परसाई और हरिमोहन झा ने अपने-अपने समृद्ध एवं श्रेष्ठ व्यंग्य लेखन के माध्यम से क्रमशः हिंदी एवं मैथिली में व्यंग्य को एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित किया है । यह शोध-विषय इन दोनों ही बड़े व्यंग्यकारों की श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाओं में व्यंग्य के स्वरूप एवं उसकी भूमिका का एक तुलनात्मक आधार तैयार करता है।

भारत में तथाकथित विकास होने के बावजूद बहुआयामी विसंगतियों (सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि) मानव समाज को अपने जकड़न में ले लेती हैं। इस जाल से निजात पाना अभी संभव नहीं हो पाया है | ये अलग बात है कि उसमें कमी आई है। लेकिन इन पर करारा प्रहार करने का सशक्त माध्यम है -व्यंग्य। व्यंग्य की सार्थकता लगभग सभी साहित्यकार स्वीकार करते हैं । हिंदी में हरिशंकर परसाई और मैथिली में हरिमोहन झा ने व्यंग्य की शक्ति को पहचान कर व्यंग्य को स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित किया।

हरिमोहन झा 'खट्टर काका' और हरिशंकर परसाई के 'वैष्णव की फिसलन' दोनों लेखकों ने हिंदी और मैथिली साहित्य कोष में चिंतन तत्व द्वारा तत्कालीन वास्तविक मांग की पूर्ति की तथा भविष्य के व्यंग्य-पथ को प्रशस्त किया है। इसका कारण यह है कि हरिशंकर परसाई का व्यंग्य लेखन राजनीति से प्रभावित नगरीय चेतना को व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत करता है। वहीं हरिमोहन झा का व्यंग्य लेखन औपचारिक न होते हुए लोकजीवन की ठोस ज़मीन अनौपचारिक यथार्थवादी समझ का लेखन है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध मैथिली के श्रेष्ठ व्यंग्यकार हरिमोहन झा और हिंदी साहित्य के व्यंग्य हस्ताक्षर हरिशंकर परसाई ने अलग-अलग साहित्य की भाषाओ में व्यंग्य विधा को प्रतिष्ठित किया। इस शोध से दोनों भाषाओ में व्यंग्य को और ज्यादा स्थापित किया है। दोनों रचनाएँ अपने-अपने समय की अन्य विधाओं से किस प्रकार भिन्न है? इस ओर ध्यान आकृष्ट करना ही इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का मुख्य उद्देश्य तत्कालीन समाज की परिस्थितियों को समझ कर व्यंग्य की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक मध्यवर्गीय यथार्थ की पीठिका प्रस्तुत करना है।

आज से लगभग पचास वर्ष पूर्व खट्टर काका मैथिली भाषा में प्रकट हुए। जन्म लेते ही प्रसिद्ध हो उठे। मिथिला के घर-घर में उनका नाम चर्चित हो गया। खट्टर काका हंसी-हंसी में भी जो उल्टा-सीधा बोल जाते हैं। उसे प्रमाणित किये बिना नहीं छोड़ते। श्रोता को अपने तर्क-जाल में उलझा कर उन्हें भूल-भुलैया में डाल देना उनका प्रिय कौतुक है। संस्कृत साहित्य में काव्य-शास्त्र-विनोद की असंख्य रस धाराएँ बहती हैं। उनकी अपूर्व भंगिमाएं हैं, कोई शोख चंचल निर्झरनी की तरह इठलाती चलती है, कोई बरसात की उमड़ी हुई गंगा की तरह बांध तोड़ देती है, कोई उछलते समुद्र की तरह अपनी उत्ताल तरंगों से आप्लावित कर देती है। कहीं रस का उफान है कहीं व्यंग्य के बुलबुले हैं। कहीं हास्य के हिलोरे हैं, कहीं परिहास का प्रवाह हैं, कहीं शास्त्रों पर छीटें बरसते हैं, कभी काव्य से अठखेलियाँ होती हैं, कभी वेद-पुराण से नोक-

झोंक होती है, कभी देवताओं से छेड़खानियां होती है, कभी भगवान से भी हास-परिहास होता है। इसी विनोद परम्परा के एक जीवन्त प्रतीक हैं 'खट्टर काका'।

'वैष्णव की फिसलन' हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचनाओं का एक महत्वपूर्ण संकलन है। सहज मर्मस्पर्शिता के साथ इन रचनाओं को विशिष्टता प्रदान करने वाला एक बड़ा तत्व है, रचनाकार की दृष्टि व सही स्वस्थ दृष्टि जीवन को व्यापक मानवीय संदर्भ प्रदान करती है। आज के जीवन की विसंगतियों और विरूपताओं, अवरोधों और कुंठाओं पर जब वे चोट करते हैं और बराबर चोट करते चलते हैं तो उनकी नुकीली कलम हथियार बन जाती है।

पहला अध्याय-'व्यंग्य की अवधारणा और स्वरूप' इस अध्याय को मैंने चार उपअध्यायों में रखा। व्यंग्य के संबंध में भारतीय विद्वानों के विभिन्न मतों को विश्लेषित किया गया है। अन्य भारतीय भाषाओं में व्यंग्य के स्वरूप को देखने का प्रयास भी किया गया है। यह देखने से साफ पता चलता है कि व्यंग्य जैसी समसामयिकता साहित्य की किसी अन्य विधा में नहीं है। इसी अध्याय में आगे पाश्चात्य साहित्य में व्यंग्य को विस्तार से देखने का प्रयास किया गया है, साथ ही पाश्चात्य विद्वानों के मतों की भी व्याख्या करने की कोशिश की गयी है। और अंत में जो विवाद का विषय अभी भी बना हुआ है **'व्यंग्य शैली है या विधा'**। इस संबंध में विभिन्न विद्वानों के मतों का उल्लेख करते हुए समझाने का प्रयास किया गया है।

दूसरे अध्याय में **'खट्टर काका'और 'वैष्णव की फिसलन' के वस्तु-विधान** पर विचार किया गया है। इस अध्याय को भी चार उप अध्याय में रखा है। सर्वप्रथम दोनों रचनाकारों के व्यक्तित्व एवं उनके रचना कर्म पर संक्षेप में विचार किया गया है। इनके सम्पूर्ण जीवन के अनछुए पहलुओं को भी देखने की कोशिश की गयी है। इसके बाद दोनों रचनाओं की मूलसंवेदना सरल भाषा में लिखी गई है।

और अंत में 'खट्टर काका' और 'वैष्णव की फिसलन'के तुलनात्मक रूप के विभिन्न पहलुओं पर बात की गयी है, जिसमें सामाजिक, धार्मिक, रूढ़िवाद, अन्धविश्वास आदि समाज की विभिन्न विसंगतियों को ध्यान में रखा गया है।

तीसरे एवं अंतिम अध्याय में **'खट्टर काका' और 'वैष्णव की फिसलन' के शिल्प-विधान** पर बात की गयी है। इसमें सर्वप्रथम व्यंग्य की शैली पर विचार किया गया है और विस्तार से समझाने का प्रयास किया गया है। इसके अलावा दोनों रचनाकारों की व्यंग्य शैली पर भी बात की गयी है। और अंत में 'खट्टर काका' और 'वैष्णव की फिसलन' की भाषा में मिथक, विभिन्न शब्दों, लोकोक्तियों, सूक्तियों और प्रतीकों पर विस्तार से बात की गयी है।

अंत में उपसंहार के अंतर्गत निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

किसी भी शोध के अंतर्गत किसी भी विषय की समस्या को लेकर कार्य करना अत्यंत दुष्कर कार्य होता है। मेरा विषय "खट्टर काका और वैष्णव की फिसलन का तुलनात्मक विवेचन" अपने आप में एक चुनौतीपूर्ण विषय है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में सर्वप्रथम मैं अपने शोध-निर्देशक एवं साहित्य विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष और हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य के विभागाध्यक्ष आदरणीय श्रद्धेय गुरुवर प्रो. कृष्ण कुमार सिंह सर के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने शोध जैसे विषय को न केवल अपने उचित मार्ग दर्शन व स्नेह से सहज बनाया अपितु समय-समय पर अपना बहुमूल्य समय देकर बहुत ही सरल तरीकों से समझाया और बताया जिसके फलस्वरूप यह अध्ययन प्रामाणिक एवं क्रमबद्ध रूप से संभव हो सका। इसके साथ ही मैं आभारी हूँ डॉ. रूपेश कुमार सिंह, डॉ. तेजनारायण ओझा, डॉ.सुनील तिवारी, डॉ. केदार कानन, का भी जिन्होंने मेरे शोध कार्य में किसी न किसी प्रकार से मार्गदर्शन किया है।

परिवार के बिना इतना दुष्कर कार्य शायद संभव नहीं होता । माँ (माधुरी देवी) एवं पिताजी (अनिल कुमार सिंह) के वात्सल्य प्रेम के बारे मे क्या कहूं? उनके बिना तो सारा जीवन अधूरा है । पूर्वजों से सुनता आ रहा हूँ कि बड़ा भाई छोटे भाई का मार्गदर्शन करता है लेकिन मैं अपने आप को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मेरे दो भाई (अविनाश और अवनीश) हमेशा जीवन के सभी सुख-दुख मे मेरे साथ खड़े रहे जिससे आज मैं इस मुकाम पर पहुँच पाया । परिवार के अन्य सदस्य जिन्होंने इस शोध-प्रबंध में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मेरे अन्दर ऊर्जा का संचार किया जिसमें मौसी (सुधा), चाचा (विनय, शंभू, विजय) और बुआ (सुधा) के प्रति अंतर्मन से आभार प्रकट करता हूँ।

जीवन मे सबसे बड़ा सुख होता है किसी को समझना और सबसे बड़ा दुख होता है किसी को न समझना । आपको समझने वाला अगर आपका मित्र हो तो यह सुख कई गुना बढ़ जाता है । इसमे मैं सबसे पहले शोध प्रबंध के लिए दिशा प्रदान करने वाले सुनील कुमार राय (विपुल) और राजेश्वर पराशर के प्रति विशेष आभार प्रकट करता हूँ। इसी क्रम में मैं अपने अजीज़ मित्र शिव कुमार, रजनेश कुमार, राज कुमार, ऋतु रानी, राकेश, आकाश, अनुरंजन और आशीष इन सब का विशेष आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मेरी समय-समय पर किताबों, पत्र-पत्रिकाओं आदि से मेरी सहायता की।

कुमार अभिषेक